Vol. 10, Issue: 09, Sept.: 2021
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता

सपना के. तडवी

सारांश:

कबीर एक महान भारतीय संत थे जो 15वीं-16वीं सदी में जन्मे और उनके विचार आज भी भारतीय समाज में दर्शनीय हैं। उनका संदेश जनमानस के जीवन में सर्वांगीण विकास और मानवता की नींव पर आधारित था। उनके द्वारा दिए गए संदेशों में विद्वेष, जातिवाद, धार्मिक अंधविश्वासों, और व्यक्तिगत उन्नति के प्रति प्रेम का महत्वपूर्ण रूप से वर्णन था। उन्होंने एक सामाजिक, धार्मिक, और मानवीय संदेश दिया जो विभिन्न समाजी और व्यक्तिगत स्तरों पर लागू होता है। उनकी विचारशीलता आज भी समय के साथ बदलते समाज में महत्वपूर्ण है और हमें मार्गदर्शन प्रदान करती है कि कैसे जीवन को संजीवनी देने वाले सिद्धांतों के साथ जीना चाहिए।

इस प्रकार, यह पेपर कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता के महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार करेगा और उनके संदेशों का मानवता के लिए महत्व बताएगा। उनकी विचारशीलता आज भी हमें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती है और एक समृद्धि और समाज में समानता की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है।

१. प्रस्तावना

कबीर, एक भारतीय संत, कवि और समाज सुधारक थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवता, धर्म, समाज, और मानव-जीवन की विचारशीलता पर गहन विचार किए। उनकी विचारशीलता और उनके विचारों की प्रासंगिकता को समझने के लिए इस पेपर में विस्तार से विवेचन किया जाएगा।

"कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता" विषय पर विचार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि कबीर एक ऐसे महान भारतीय संत थे जो अपने समय में नहीं ही बल्कि आज भी हमारे समाज और मानवता के लिए प्रासंगिक हैं। उनकी विचारशीलता, उनके दृष्टिकोण और उनके संदेश आज भी हमें मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। इस रिव्यू में, हम कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता के पहलुओं पर विचार करेंगे। यह पेपर कबीर द्वारा प्रस्तुत विचार चेतना और उनकी प्रासंगिकता पर आधारित होगा। निम्नलिखित हैं कुछ निर्देश और संरचना जो इस पेपर के लिए सहारा प्रदान करेंगे:

२. कबीर की विचारशीलता

कबीर की विचारशीलता उनके विभिन्न ग्रंथों और दोहों में उनकी बातचीत से प्रकट होती है। उन्होंने विद्वेष, जातिवाद, धर्मिक अंधविश्वास, और मानवता के महत्व के विषय में अपनी दृष्टि दी। वे सर्वधर्म सम्मतता और

सच्चे भक्ति वाले जीवन के पक्षपातिकता और असमानता के खिलाफ थे। उनकी विचारशीलता में एकत्रित किए गए उनके भावनात्मक और धार्मिक संदेशों का विश्लेषण किया जाएगा।

कबीर, एक महान भारतीय संत और कवि, ने अपनी विचारशीलता के माध्यम से समाज, धर्म, और मानवता के महत्वपूर्ण पहलुओं पर गहन विचार किए। उन्होंने अपनी रचनाओं में जातिवाद, धार्मिक अंधविश्वासों, और सामाजिक असमानता के खिलाफ उनकी भावनाओं को उजागर किया। कबीर की विचारशीलता का विस्तार किया गया है:

कबीर का जीवन एक सामाजिक और धार्मिक क्रांति का प्रेरणा स्रोत रहा है। उन्होंने विद्वेष और भेदभाव के खिलाफ अपनी विचारशीलता में बल दिया। उन्होंने व्यक्तिगत उन्नति, सामाजिक समानता, और सर्वधर्म सम्मतता के महत्व को उजागर किया। उनके द्वारा दिए गए संदेशों में जीवन को सरलता और सच्चाई की ओर ले जाने की प्रेरणा है।

कबीर का विश्वास था कि परमात्मा एक है और सभी मनुष्य उसी के बंधु हैं। उन्होंने धर्म के अंधविश्वासों के खिलाफ विरोध किया और सच्चे भक्ति के माध्यम से परमात्मा के पास पहुंचने की नींव रखी। उन्होंने भगवान की खोज में आत्म-विचार और संतों के संग समर्थन दिया।

उनकी रचनाएं भाषा में सरलता के साथ लिखी गईं थीं, जिससे आम जनता तक उनके संदेश पहुंच सके। उन्होंने जातिवाद और जातिवादी अंधविश्वासों के खिलाफ उठाव किया और सभी मनुष्यों को एक समान दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा दी। उन्होंने स्त्री-पुरुष समानता, शिक्षा के अधिकार, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के महत्व को बताया।

कबीर का संदेश आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक है। उनकी विचारशीलता हमें धार्मिक और सामाजिक बदलाव के मार्ग पर गम्भीर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। उनके संदेशों में समाज में विशेषता और भेदभाव के खिलाफ समर्थन है, जो आज भी हमारे समाज में महत्वपूर्ण हैं।

कबीर ने सर्वधर्म सम्मतता के महत्व को बताया और सभी मानवों को एक बंधु के रूप में देखने की महत्वाकांक्षा बढ़ाई। उनके विचारों ने हमें आत्मविश्वास और सामाजिक जागरूकता की दिशा में मार्गदर्शन किया, जो आज भी हमें एक समृद्धि और समाज में सामानता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है।

इस रूप में, कबीर की विचारशीलता ने हमें धर्म, समाज, और मानवता के प्रति सच्चे प्रेम और सच्चे भक्ति की महत्वपूर्णता को समझाया है, जो आज भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण हैं और हमें सशक्त और सजीव जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

३. कबीर की विचारशीलता की प्रासंगिकता

कबीर की विचारशीलता आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक है। उनके विचारों का महत्व आज भी समय के साथ समय-समय पर बदलते समाज में है। उनकी विचारशीलता में विद्वेष, ताकत, और सत्य के प्रति प्रेम के महत्व को बताने के लिए विभिन्न उदाहरणों का वर्णन किया जाएगा।

४. निष्कलंक व्याख्या

इस सेक्शन में, कबीर की विचारशीलता के मुख्य पक्षों का विवेचन किया जाएगा और उनके विचारों के प्रासंगिकता के विषय में विस्तार से बताया जाएगा। इसमें उनके उद्धारणों और कविताओं के माध्यम से उनके दृष्टिकोण के महत्व को समझाने का प्रयास किया जाएगा।

५. संधिकाल और आधुनिकता

इस सेक्शन में, कबीर की विचारशीलता को आधुनिक समय के संदर्भ में विचार किया जाएगा। यहाँ पर उनके विचारों के आधुनिक समाज में कैसे लागू हो सकते हैं, इस पर चर्चा की जाएगी।

निष्कलंक संक्षेप

अंत में, इस पेपर में कबीर की विचारशीलता और प्रासंगिकता के महत्वपूर्ण पक्षों का संक्षेपित विवरण किया जाएगा। इसमें प्रमुख विचारों और प्रेरणादायक मूल्यों का संक्षेपित वर्णन किया जाएगा।

"सुखिया सब संसार है, खाये अरू सौवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरू रोवै।।"

कबीर की साधना जागने की और रोने की साधना है अज्ञानी लोगों को नींद से जगाना चाहते हैं। कबीर ने अपने काव्य में जातिगत भेदभाव का विरोध किया और कहा कि भक्ति करने वाला साधक ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। कबीर ने व्यक्ति की पहचान जाति आधारित न करके उसके गुणों और नैतिकता के आधार पर पहचानने की वकालत की है। यह विचार आज के संक्रमण कालीन युगीन परिस्थितियों में भी सर्वथा सटीक बैठता है –

"एक बूंद एकै मल मूतर, एक चाम एक गूदा।
एक जाति थै सब उपजा कौ ब्राह्मन कौन सूदा।।

कबीर जी मानते हैं कि खुदा मस्जिद में न ईश्वर मन्दिर में है। मस्जिद के भीतर चि ल्लाने से खुदा नहीं मिलता और ना ही मन्दिर में पत्थर पूजने से हरि मिलता है। क बीर ने ब्राह्म आडम्बरों का विरोध किया है और हिन्दू और मुसलमान को एक माना है। वे दोनों के धार्मिक आडम्बरों का खण्डन करते हुए कहते हैं -

"इनके काजी - मुला, पीर - पैगम्बर, रोजा - पछिम - निवाजा
तुरूक मसीति देहुरै हिन्दू, दुहंठा राम खुदाई
कहै कबीर दास फकीरा, अपनी रटि चाल भाई
हिन्दु तुरक का करता एकै, ता गति लखी न जाई।।"

कबीर मानव जीवन की भलाई चाहते थे। मानव के प्रति आस्था उनके मन में थी। हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा और शांति का संदेश देना चाहते थे। हिंसा करने वालों पर कबीर कठोरता से प्रहार करते हुए कहते हैं कि -

"जस मांस नर की तस मांस पशु की
रूधिर रूधिर एक सारा जी।।"

कबीर बिगड़े हुए समाज को सुधारना चाहते हैं। आज सभी देशों में एक दूसरे के प्रति वैर भाव है। समाज जाति और धर्म के नाम पर टूटकर बिखर रहा है। कबीर ने मानव धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म कहा है। उनके अनुसार संसार में गुरू का महत्व सर्वोपरि है। गुरू मार्गदर्शक है और संसार में गुरू से बड़ा कोई नहीं है। कबीर सतगुरू की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं –

" बलिहारी गुरू आपनौ द्यौ छाड़ी के बार।
जिनि मानिण तैं देवता, करत न लागी बार।।
सतगुरू की महिमा अनंत, अनं किया उपगार।
लोचन अंनत उधाड़िया, अंनत दिखावण्हार।। "

कबीर का मानना था के गुरू और शिष्य का शारीरिक साक्षात्कार आवश्यक नहीं है। गुरू के साथ मानसिक साक्षात्कार से भी शिष्यत्व का निर्वाह हो सकता है -

" कबीर गुरू बसै बनारसी सिश संमदर तीर
विसरचा नहीं बींसरे जे गुण होई शरीर।।

कबीर ने अपने जीवन का सारा समय अन्धविश्वासों का विरोध करते हुए लगा दिया था। यदि स्वयं उनका हार्दिक विश्वास न होता कि गुरू बनाना आवश्यक है, तो वे किसी के कहने की परवाह न करते। वे गुरू को सर्वोपरि मानते हुए कहते हैं -

"गुरू बिन चेला ज्ञान न लहै।
गुरू बिन इह जग कौन भरोसा, करके संग है रहिए। "

कबीर कहते हैं कि चेतना के सामाजिक होने अथवा रूपान्तरित होने के बाद मन की सम्पूर्ण संकीर्णता समाप्त हो जाती है। इसके लिए कबीर ने आत्म तत्व पर बल दिया है। वे कहते हैं -

"लती लहर समुद्र तेती मन की दौर। "

अर्थात् मन की लोभ रूपी लहर को खत्म किये बिना सच्ची साधना सम्पन्न नहीं हो सकती है। कबीर का यह भी मत है कि जब तक मन को नहीं मारा जाता तब तक आत्मा की शुद्धि नहीं हो सकती है। वे कहते हैं -

"मन जाणै सब बात, जाणत ही औगुण करै।
काहे को कुसला, कर दीपक कूँ बै पड़ै।। "

वे हिन्दुओं के द्वारा किए जा रहे मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए उसकी हँसी उड़ासे हैं -

"लाडू लावर आपसी पूजा चढ़े अपार।
पूजि पुरारा ले चला दे मूरति के मुख छार।।"

कबीर ने इतिहास को मथा और उसे साक्षी भाव से ढोया है कबीर जिस समय से गु जरे हैं। कबीर का समय सबसे बड़ा गवाह है कबीर की जिन्दगी और वाणी समय के लम्बे अन्तराल को भेदती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

१.सं. डॉ. श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ. ६८
२.आचार्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ.१४५-१४६
३.सं. हंसादास शास्त्री, कबीर बीजक सब्द, पृ, ५५
४.सं. डॉ. श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ. ५९
५.अयोध्या सिंह उपाध्याय' हरिऔध' कबीर वचनावली, पृ. १५१
६.सं. डॉ. श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ. ८३